



लेडी विल्किंसन स्वॉर्ड

ज़िंदगी कभी मौकों का संग्रह नहीं होती।

ज़िंदगी एक अकेला मौका है, जो दोबारा कभी नहीं आता।

मेरे लिए ऐसा ही था।

इतालवी फ्रीमेसनरी में अपने बरसों के दौरान, जिसे उसकी रस्मों और परंपराओं में यूनाइटेड ग्रेंड लॉज ऑफ़ इंग्लैंड की मान्यता हासिल है, मुझे एक कुछ अनोखी-सी महफ़िल में शामिल होने का मौका मिला।

मैं तब तक तीसरी डिग्री में पहुँच चुका था, फिर भी मैं सही मन लेकर पहुँचा: एक शागिर्द का मन।

वह कोई रस्मी बैठक नहीं थी।

न एप्रन थे, न प्रतीक, न रटने के लिए शब्द।

वह बस एक डिनर था।

लंदन में एक डिनर।

उन शामों में से एक, जो जीते वक्त मामूली लगती हैं और बहुत बरसों बाद ही ग़ैर-मामूली बनती हैं, जब आख़िरकार उनका मतलब समझ में आता है।

लंदन में उसकी वही हमेशा वाली कशिश थी।

इतिहास मानो हर इमारत से झाँक रहा था।

ताज।

द सिटी।

प्राइवेट क्लब।

संस्थाएँ।

वे परंपराएँ, जो उन्हें बनाने वाले आदमियों से ज़्यादा जीती हैं।

जिलेट के भीतर के अपने पिछले पेशेवर तजुबों की बदौलत, और उन्हीं जगहों पर, लगभग इत्तफ़ाक़ से, मेरा सामना एक ऐसी कहानी से हुआ जो मुझसे कहीं ज़्यादा पुरानी थी।

एक कहानी, जो फ्रीमेसनरी की नहीं थी।

न ही वह कारोबार की थी।
वह इंग्लैंड की थी।
उसका नाम था विल्किंसन स्वॉर्ड।
या शायद उन्हें यह कहना ज़्यादा सही होगा:
लेडी विल्किंसन स्वॉर्ड।
क्योंकि कुछ कंपनियाँ मुनाफ़ा पैदा करती हैं।
कुछ इतिहास रचती हैं।
उन्होंने दोनों काम किए थे।
उनका लहजा अंग्रेज़ी था, तौर-तरीक़ा शालीन, अंदाज़ नफ़ीस।
वे उन बरसों के आर-पार मुस्कुराती थीं जिन्हें वे ढो रही थीं।
वे जानती थीं कि अब वे जवान नहीं रहीं।
जवानी का हल्कापन वे खो चुकी थीं, मगर दिमाग की स्पष्टता नहीं।
उनकी बुद्धि मज़बूत बनी हुई थी।
उनके विचार धारदार बने हुए थे।
जब भी वे मुझसे बात करतीं, उसी लगभग रूमानी लहजे में करतीं जो अँगीठी के पास घुरघुराती किसी बूढ़ी बिल्ली का होता है, और मेरा नाम हमेशा एक हल्की-सी चूक के साथ लेतीं:
“फर्नांदो...”
उन्हें कभी परिचय की ज़रूरत नहीं पड़ी।
उन्हें बस कमरे में दाख़िल होना होता था।
इतिहास का बोझ वे अपने साथ लिए चलती थीं।
वे जंगों, राजाओं, रानियों, औद्योगिक क्रांतियों, अधिग्रहणों और बोर्ड की बैठकों से गुज़र चुकी थीं।
उन्होंने आदमियों को अमीर बनते देखा था।
उन्होंने साम्राज्यों को मिटते देखा था।
उन्होंने ऐसे मैनेजर देखे थे जिन्हें यक़ीन था कि वे अमर हैं।
और फिर भी, वे अब तक वहीं थीं।

शालीन।

खामोश।

ब्रिटिश।

उस पल मैं समझ गया कि कुछ कंपनियाँ कंपनियाँ होती ही नहीं।

वे संस्थाएँ होती हैं।

कुछ शेयरधारकों की होती हैं।

कुछ इतिहास की।

लेडी विल्किंसन स्वॉर्ड दूसरी क्रिस्म की थीं।

और मैं भी, बस ज़रा-सा, उनका होने लगा था।

फर्दिनांदो